بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **15.12.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

सहाबा किराम ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति वह सच्चाई दिखलाई कि उन्हें رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡہُ की आवाज़ आ गई

अल्लाह तआला से प्रसन्न हो जाना किसी व्यक्ति का काम नहीं अपितु यह भरोसे, परीक्षा तथा एक दूसरे के प्रति संतुष्टि का उच्चतम स्तर है।

अल्लाह तआला का अपने बन्दों से प्रसन्न हो जाना निर्भर है बन्दे के उच्च स्तरीय सत्य एवं आज्ञापालन तथा उच्च श्रेणी की पवित्रता और शुद्धता तथा आज्ञापलन के उत्तम स्तर पर जिससे ज्ञात होता है कि सहाबा ने मअरिफ़त तथा व्यवहार के सम्पूर्ण स्तर तय कर लिए थे

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अत्तौबा की निम्नलिखित आयत की तिलावत फ़रमाई-

وَالسّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ مِنَ الۡمُہٰجِرِیۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ وَالَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡہُمۡ بِاِحۡسَانٍ ۙ رَّضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡہُ وَاَعَدَّ لَہُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ تَحۡتَہَا الۡاَنۡہٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ

अनुवाद- और महाजरीन (प्रवासी) और अन्सार में से अग्रिम श्रेणी तथा वे लोग जिन्होंने सुन्दर आचरण के साथ इनका नुसरण किया, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया तथा वे उससे प्रसन्न हो गए और उसने उनके लिए ऐसी जन्नतें तय्यार की हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं, वे सदैव उनमें रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ी सफलता है।

इस आयत में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा का वर्णन है जो अग्रिम स्तर प्राप्त करने वाले हैं, जो आध्यात्मिक स्तर में सबसे ऊपर हैं तथा अपने ईमानों के स्तरों और अल्लाह तआला की शिक्षानुसार कर्म करने वालों में शेष सबको पीछे छोड़ने वाले हैं। ये लोग हैं जो सबसे पहले ईमान लाए तथा बाद में आने वालों के लिए अपने उदाहरण नमूने के रूप में छोड़ गए ताकि दूसरे लोग उनके नमूनों का अनुसरण करें। अतः अल्लाह तआला ने यहाँ सहाबा को बाद में आने वालों के लिए एक अनुसरणीय नमूना बनाया है तथा घोषणा फ़रमाई है कि अल्लाह तआला उनके ईमान के स्तर तथा उन कर्मों से प्रसन्न हुआ और उन्होंने भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। हर हाल में वे अल्लाह तआला के आभारी बन्दों में शामिल रहे। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो भी इन नमूनों पर चलते रहेंगे ईमान और निष्ठा और वफ़ा में, और शुभ कर्म करते रहेंगे, ख़ुदा तआला के पुरस्कारों को प्राप्त करने वाले बनते रहेंगे। अल्लाह तआला ने सहाबा का नुसरण करने को हिदायत पाने का माध्यम बनाया है। अतः एक हदीस में आता है, हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि मैंने अपने सहाबा के मतभेद के विषय में अल्लाह तआला से प्रश्न

किया तो अल्लाह तआला ने मेरी ओर वह्यी फ़रमाई कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे सहाबा का मेरी दृष्टि में ऐसा स्तर है जैसे आसमान में तारे हैं, कुछ उनमें से दूसरों से अधिक प्रकाश वाले हैं किन्तु नूर उनमें से प्रत्येक में विद्यमान है, अतः जिसने तेरे किसी सहाबी का अनुसरण किया मेरी दृष्टि में वह सत्य मार्ग पर होगा।

इस प्रकार अल्लाह तआला ने यह स्तर फ़रमाया है आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा का। प्रत्येक उनमें से हमारे लिए मार्ग दर्शक है। सहाबा के स्तर और स्थान और अल्लाह तआला के उनसे प्रसन्न होने का वर्णन करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सहाबा ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में वह सच्चाई दिखलाई कि उन्हें رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ की आवाज़ आ गई। यह उच्चतम स्तर है जो सहाबा को प्राप्त हुआ अर्थात अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो गया तथा वे अल्लाह तआला से प्रसन्न हो गए। इस स्तर के गुण तथा श्रेणियाँ और अति उत्तम कर्म शब्दों में बयान नहीं हो सकते। अल्लाह तआला से राज़ी हो जाना किसी व्यक्ति का काम नहीं बल्कि यह भरोसे और सुनने व मानने का उच्चतम स्तर है जहाँ पहुंच कर इंसान को किसी प्रकार का शिकवा शिकायत अपने मौला से नहीं रहता तथा अल्लाह तआला का अपने बन्दे से प्रसन्न हो जाना इस बात पर निर्भर करता है कि बन्दे में उच्च स्तरीय सत्य पाया जाए तथा आज्ञापालन और उच्च स्तरीय पवित्रता शुद्धता एवं आज्ञापालन के उच्च स्तर पर हो जिससे मालूम होता है कि सहाबा ने मअरिफ़त और सलूक (सत्यमार्ग) के समस्त स्थान पार कर लिए थे।

अतः सहाबा हमारे लिए नमूना हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक अवसर पर अपने सहाबा के स्तर एवं श्रेणी के विषय में बयान फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला से भय के साथ काम लेना, उनपर आपत्ति मत करना, जो व्यक्ति उनसे प्रेम करेगा वह वास्तव में मुझसे प्रेम के कारण करेगा तथा जो व्यक्ति उनके साथ द्वेष रखेगा वह वास्तव में मेरे साथ द्वेष रखने के कारण उनसे द्वेष रखेगा। जो व्यक्ति उनको दुःख देगा, उसने मुझको दुःख दिया और जिसने मुझे दुःख दिया उसने अल्लाह को दुःख दिया और जिसने अल्लाह को दुःख दिया तथा अप्रसन्न किया तो स्पष्ट हो कि वह अल्लाह की पकड़ में है।

फिर एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहना, उनके किसी कार्य की आलोचना नहीं करना, ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है यदि तुम ओहद पहाड़ के बराबर भी सोना दान कर दो तो भी तुम्हें उतना प्रतिफल और सवाब नहीं मिलेगा जितना उन्हें एक दरहम अथवा उसके आधे दरहम के बराबर ख़र्च करने पर मिला था।

अतः ये वे लोग हैं जिनका स्तर और प्रतिष्ठा बड़ी उच्च श्रेणी की है तथा हमारे लिए नमूना हैं, उनके पीछे हमें चलना है यदि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करनी है तो, बजाए इसके कि किसी के विरुद्ध कोई बात की जाए अथवा किसी के विषय में मन में कुधारणा आए। किसी के स्तर को हम अपने बनाए हुए स्तर के अनुसार जांचने का प्रयास करें, यह अनुचित भावना है।

हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, सहाबा के स्तर एवं प्रतिष्ठा का और अधिक बोध प्रदान करते हुए फ़रमाते हैं कि न्याय की दृष्टि से देखा जाए कि हमारे हादी-ए-अकमल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए क्या क्या बलिदान दिए, बस्ती से निकाले गए, अत्याचार सहन किए, भांत भांत की जटिलताएँ सहन कीं, जानें दीं किन्तु सत्य एवं वफ़ा के साथ क़दम मारते ही गए। अतः वह क्या बात थी कि जिसने

उन्हें ऐसा जीवन को बलिदान करने वाला बना दिया, वह सच्ची इलाही मुहब्बत का जोश था जिसकी किरणें उन के दिल पर पड़ चुकी थीं। इस लिए चाहे किसी नबी से तुलना कर ली जावे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्रता प्राप्ति की शिक्षा अपने अनुसरण करने वालों को दुनिया से विमुख करा देना, शौर्य के साथ सत्य के लिए ख़ून बहा देना, इसका उदाहरण कहीं न मिल सकेगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में जो आपस में स्नेह एवं प्रेम था उसका चित्रण दो वाक्यों में बयान फ़रमाया है क़ुर्आन-ए-करीम में, कि وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۔ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ अर्थात- जो स्नेह उनमें है वह कदाचित पैदा न होता, चाहे सोने का पहाड़ भी दान किया जाता। आप फ़रमाते हैं कि अब एक और जमाअत मसीह मौऊद की है जिसने अपने अन्दर सहाबा का रंग पैदा करना है। सहाबा की तो वह पवित्र जमाअत थी जिसकी प्रशंसा में क़ुर्आन शरीफ़ भरा पड़ा है। फ़रमाते हैं, क्या आप लोग ऐसे हैं? जब ख़ुदा कहता है कि मसीह के साथ वे लोग होंगे जो सहाबा की श्रेणी के होंगे। सहाबा तो वे थे जिन्होंने अपना माल, अपना देश, सत्य के मार्ग में बलिदान कर दिया और सब कुछ त्याग दिया। हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर का मामला कई बार सुना होगा, एक बार जब अल्लाह के रास्ते में माल देने का आदेश हुआ तो घर की पूरी सम्पत्ति ले आए। जब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर में क्या छोड़ आए हो तो फ़रमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर में छोड़ आया हूँ। आप फ़रमाते हैं कि मक्का के धनी व्यक्ति हों अथवा कम्बल ओढ़ने वाले हों, यह समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा के लिए शहीद हो गए, उनके लिए तो यही लिखा है कि सैफ़ों अर्थात तलवारों के नीचे जन्नत है। परन्तु हमारे लिए तो इतनी जटिल समस्या नहीं क्यूँकि यदअुल हरब हमारे लिए आया है, अर्थात मेहदी के समय में लड़ाई नहीं होगी। फिर सहाबा के जीवन का चित्रण करते हुए फ़रमाते हैं कि देखो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रतिष्ठित सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन क्या आराम पसन्द तथा खाने पीने में अधिक रूचि रखते थे, जो काफ़िरों पर प्रभुत्व रखने वाले थे? केवल सरलताएँ चाहते थे इस कारण से काफ़िरों पर ग़ालिब आ गए? फ़रमाया कि नहीं, यह बात तो नहीं, पहली किताबों में भी उनकी विषय में आया है कि वे रातों को इबादत करने वाले, दिनों में रोज़े रखने वाले होंगे, उनकी रातें ज़िक्र (अल्लाह को याद करने) और फ़िक्र (इस्लाम को ग़ालिब करने) में व्यतीत होती थीं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- सहाबा के कैसे नमूने थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति के परिणाम स्वरूप उनमें पैदा हुए, उनके कुछ उदाहरण पेश करता हूँ-

हज़रत उमर की सज्जनता के विषय में एक घटना इस प्रकार मिलती है कि एक व्यक्ति ने हज़रत उमर से कहा कि आप हज़रत अबू बकरे से अच्छे हैं। इस पर हज़रत उमर रोने लगे और फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम हज़रत अबू बकर की एक रात तथा एक दिन ही उमर तथा उसकी संतान के पूरे जीवन से उत्तम है। फ़रमाया- क्या मैं तुम्हें उस रात और दिन का हाल सुनाऊँ। पूछने वाले के कहने पर कि हाँ जी फ़रमाएँ, आपने फ़रमाया कि उनकी रात तो वह थी जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत करके रात को जाना पड़ा और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने आपका साथ दिया तथा उनका दिन वह था जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तथा अरब के लोग नमाज़ और ज़कात के इंकारी हो गए उस समय उन्होंने मेरे विचार के विरुद्ध जिहाद का निश्चय किया तथा अल्लाह तआला ने उन्हें इसमें सफलता देकर सिद्ध कर दिया कि वे सत्य मार्ग पर थे।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक अन्य प्रतिष्ठित सहाबी हज़रत उसमान थे, जो तीसरे ख़लीफ़ः भी थे। हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि हज़रत उसमान सबसे बढ़कर दयालु व्यवहार करने वाले तथा सबसे बढ़कर अल्लाह तआला से डरने वाले थे। जब मस्जिद-ए-नबवी के विस्तार का मामला आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आस पास कि जितने मकान हैं उनको मस्जिद में शामिल कर लिया जाए। ज्ञात हो कि वे मकान लोगों से ख़रीदने थे, उस समय हज़रत उसमान ने, अर्थात तुरन्त अपने आपको पेश किया कि मैं ये ख़रीदता हूँ और पन्द्रह हज़ार दरहम देकर वे मकाने ख़रीद लिए। मुसलमानों को पानी की समस्या का समाना हुआ, एक यहूदी का कुआँ था वहाँ से पानी लेने में कठिनाई थी तो आपने यहूदी से मुंह मांगे मूल्य पर वह कुआँ ख़रीद कर मुसलमानों के लिए पानी का प्रबन्ध फ़रमाया।

फिर हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु हैं, अमीर मआवियः ने किसी से हज़रत अली के गुण बयान करने के लिए कहा, उसने कहा कि वे बड़े साहसी तथा सुदृढ़ शक्तियों के स्वामी थे, निर्णायक बात कहते तथा न्याय के साथ फ़ैसले करते। उनकी ओर से ज्ञान का स्रोत फूटता तथा प्रत्येक विवेक उनके हर ओर टपकता, दुनिया और उसकी समृद्धि से भय अनुभव करते तथा रात तथा उसमें एकांत अवस्था को पसन्द करते। वे बहुत रोने वाले, लम्बा चिंतन करने वाले थे तथा हममें हमारी भांति रहते थे, बड़ा सादा जीवन था। ख़ुदा की क़सम हम उनके साथ मुहब्बत और निकटता के बावजूद उनके रौब के कारण बात करने से रुकते थे। वे दीनदार लोगों का सम्मान करते और निर्धनों को अपने पास स्थान देते। शक्तिशाली को उसके अनुचित काम में स्वार्थ का अवसर न देते। अमीर मुआवियः ने कहा तुम सच कहते हो और रो पड़े।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के ज़माने को यदि देखा जाए तो पता चलता है कि वे बड़े सीधे सादे थे जैसे कि एक बर्तन को क़लअी (पॉलिश) कराकर साफ़ और सुथरा हो जाता है, ऐसे ही उनके दिल थे जो इलाही कलाम के नूर से प्रकाशमय तथा आत्मा के द्वेष से बिल्कुल विशुद्ध थे। मानो قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى की सच्ची पुष्टि करने वाले थे। आप फ़रमाते हैं कि यदि इंसान इसी प्रकार शुद्ध हो तथा अपने आपको क़लअीदार बर्तन की भांति चमकीला करे तो ख़ुदा तआला के पुरस्कारों का भोजन उसके दिल में डाल दिया जावे, किन्तु अब कितने ऐसे हैं और قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى के सत्यार्थ हैं।

अतः हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम अपना सुधार करें तथा अपने बर्तनों को साफ़ करें और जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को इस ज़माने में माना है, तो फिर इन सारी बातों के अनुसार कर्म का भी प्रयास करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई हैं तभी हम वास्तविक मुसलमान भी बन सकते हैं। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

TOLL FREE NO: 180030102131